

प्रकृपस्वत्र भवति *findet statt* AV. PAṬ. 2, 39. अक्षरर्क्ष्यान्महानुत्सवः Spr. 3167. वभूवृर्हि पुरोडाशा भक्ष्याणां मृगपत्तिषाम् । पुरोषोषाप यज्ञेषु *es gab* M. 3, 23. तत्राश्रमपदे काण्डोर्भव *befand sich* BRAHMA-P. in LA. (II) 49, 11. अमृत्वो विवृधसलः — दशरथ इत्युदाहृतः *es war ein Mal ein König* BHATT. 1, 1. KATHĀS. 14, 37. भवति भोक्तुम् *es ist Etwas da zum Essen* Sch. zu P. 3, 4, 65. जगाम यत्र सा बाला ब्राह्मणोऽसहभवत् *wo sie sich befand* N. 16, 31. तावन्नपि भविष्यामि 3, 31. पथि भव *bleibe auf dem Wege* MEGH. 29. तदण्डमभवद्द्वैमम् *das wurde zu einem goldenen Ei* M. 1, 9. प्रमुदितो ऽभवत् R. 1, 9, 39. ÇĀK. 31, 3. PRAB. 64, 10. तस्य कोपाग्निना दग्धा भविष्यति नृपात्मजाः *werden verbrannt werden* R. 1, 41, 13. PRAB. 37, 6. (दीपाः) कृतवियो वभूवुः RAGH. 3, 15, 13, 47. MEGH. 3, 30. अमृतसंपादितस्वाडुफलो मे मनोरथः ÇĀK. 108, 15. Spr. 3178. यौवनवती वभूवुः Hit. 28, 4. VER. in LA. (II) 19, 2. अणुमात्रिको भूवा M. 1, 56. गर्भो भूवा 9, 8. प्राञ्जलिर्भूवा N. 3, 16. 7, 6. 9, 19. 14, 4. INDR. 1, 10. R. 1, 2, 27. 63, 24. 63, 5. ÇĀK. 12, 20. VER. in LA. (II) 14, 17. पृष्ठतो भूवा, °भूय und °भावं तिष्ठति P. 3, 4, 61. तृष्टो भूवा, °भूय und °भावं तिष्ठति 63. नाना विना, द्विधा, द्वैधं u. s. w.) भूवा, °भूय und भावम् 62. imper. : कालात्तरेण पैरेव भूमिपालैर्भविष्यते *die Fürsten werden werden* RĀGA-TAR. 3, 418. तिरेभूयते st. तिरेभवति Schol. zu Kap. 1, 121. कुमूलधान्यको वा स्यात् — त्र्यहैहिको वापि भवेत् *sein* M. 4, 7. अग्निपक्षाशिनो वा स्यात् — अश्वकुटो भवेद्वापि 6, 17. 8, 298. 1, 49. 2, 128. 153. एवमिद्वानुनाथिन पालिता सभवत्पुरी R. 1, 6, 19. 2, 23, 34. रिक्तः सर्वो हि भवति लघुः MEGH. 20. 91. 101. 106. 111. ततः स्वामिन्मारास्य पादमूलं गतो ऽभवत् KATHĀS. 2, 60. 79. रक्तनेत्रस्त्रिंशो भूकुटो दधानः सूक्राणी परिलोलिहस्त्वां दृष्ट्वा यदि भविष्यति PAÑĀT. 83, 4. VER. in LA. (II) 17, 1. 22, 22. तत्तन्नाञ्च स राजाभूदिप्रो भूवा *der er früher Brahmane gewesen war* VID. 333. कथं वुद्धा भविष्यति *wie wird ihr sein, wenn sie erwacht?* N. 10, 22. 11, 11. fg. 12, 65. BRĀHMAN. 2, 9. नाभितानामि भवेदेवं न वेति *ob es sich so verhält oder nicht* N. 20, 9. श्रेयस्त्वं क्वेति चेद्वेत् so v. a. *wenn die Frage aufgeworfen werden sollte* M. 10, 66. 82. 12. 108. Folgende Verbindungen und Formen führen wir der besseren Uebersicht wegen besonders auf: a) mit न *zu Nichte werden, aufhören zu sein, sterben*: यस्य ब्राह्मणं प्राप्य न भवत्यसुहृद्गणाः MBH. 1, 2824. तेन जीवसि राजर्षे न भवद्यास्त्वमन्यथा 13, 2881. ऋते ऽपि त्वा न भविष्यति सर्वे BHAG. 11, 32. N. 21, 10. MBH. 1, 2781. 3, 16013. 13, 1900. R. 1, 53, 27. 3, 73, 17. 6, 11, 5. Spr. 3905. ÇĀK. 94, 2. KATHĀS. 49, 63. PAÑĀT. 164, 13. कुत्रापानयाञ्चापि पृथिवी न भविष्यति *wird zu Grunde gehen* MBH. 1, 1971. श्रुत्वोऽपि तु कथो राज्ञः भवतीह मानवाः *erscheinen nicht wieder hier auf Erden, werden nicht wiedergeboren* 3, 13429. — b) mit gen. (selten dat. loc.) der Person: Jmd zu Theil werden, Jmd treffen, esse alicui RV. 10, 40, 3. तस्य शतं ज्ञाया वभूवुः AIR. BR. 7, 13. इदमु नो भविष्यति TBH. 1, 1, 1. बद्ध मे भूयात् ÇĀK. 2, 10, 2. 4, 11, 3. तस्य तेनोनया नोक्ता भवन्ति M. 6, 39. श्ववगा वृश्चिवा दशाः — कीटाश्च मा भूवन्गह्ने so v. a. *mögest du nicht auf Affen u. s. w. stossen* R. 2, 23, 16. धर्मपद्ममो राज्ञो भवति रत्नतः M. 8, 304. 9, 155. Spr. 1784. PAÑĀT. 7, 8. ऋयप्रङ्ग इति ज्ञ्यातस्तस्य पुत्रो भविष्यति R. 1, 8, 7. VID. 268. गर्भो ऽभवद्दधररा-जपत्न्याः KUMĀRAS. 1, 19. क्रुद्धदापि प्रसन्नादा किं मे ततो भविष्यति MBH. 2, 1379. तस्य भूतस्य नो दुःखादुःखमभ्याधिकं भवेत् N. 11, 16. वैतृष्यं यामु

(अप्सु) गोर्भवेत् M. 5, 128. यथा श्रेयो हि नो भवेत् N. 12, 90. R. 2, 23, 30. VID. 184. यो दातुर्भवेत्पूर्ध्वं फलोदयः M. 3, 169. 178. भूतानां यद्भूयासुर्विभूतयः BHĀG. P. 6, 4, 44. प्रहृष्टिद्वित्रिप्राणां यत्रतेत्किा भवेदधः M. 8, 104. नातायिष्ये दोषो भवति क्लृप्तः कथं न 351. 10, 103. N. 4, 19. यस्यैकानुशयो भवेत् M. 8, 222. 228. तस्य देवतानामभूद्वयम् R. 1, 63, 16. त्वदर्थं एवाभूच्छर्वाज्ञानुग्रहः स मे VID. 272. तुत्पियसि न ते राम भविष्यते R. 1, 24, 17. यस्यास्तु न भवेद्भ्राता *die keinen Bruder hat* M. 3, 41. KATHĀS. 14, 37. नहीदृशं तापसानां त्रयं भवति कर्हिचित् R. 1, 9, 45. VID. 109. न पुत्रो न पिता तत्र भवेद्यत्र स्त्रियाः पतिः Spr. 4313. तस्य प्रसङ्गा ऽभूदेवने N. 13, 32. यथा ह्येकेन चक्रेण रथस्य न गतिर्भवेत् Spr. 2330. VID. 111. 118. Spr. 1873. इति मे मतिर्भवति SĀMĀHJAK. 61. mit dat. : अहोऽयस्मै सुदिना भवति RV. 7, 11, 2. भद्रमेभ्यो ऽभूत् ÇAT. BR. 4, 6, 9, 19. mit loc. : पाले तत्किल्बिषं भवेत् M. 8, 235. mit परि und प्रति und einem vorangehenden acc. : हरिं पर्यभवन्नहमीहरे प्रति क्लृप्तम् VOP. 3, 7. — c) mit gen. der Person *auf Jmdes Seite sein, Jmd beistehen* P. 5, 4, 48. सत्कृताश्च कृताद्याश्च मित्राणां न भवन्ति ये Spr. 3124. st. des gen. auch die adv. Form auf तस् P. a. a. O. देवा अर्जुनतो oder अर्जुनस्याभवन् Sch. — d) mit dat. der Sache *sein —, erreichen —, dienen —, verhelfen zu*: सद्यो भुवद्दीर्घाय नोधाः RV. 1, 61, 14. वृधे भुवद्द्वयोः 4, 23, 2. 5, 3, 4. मा ते भूम परी 7, 19, 7. अर्भुद्विः समिधे मानुषाणाम् 77, 1. अयसे 48, 4. दातुर्भवेत्यनर्थाय M. 4, 193. क्लिप्ताय BRĀHMAN. 3, 19. सुखाय KUMĀRAS. 1, 23. भवाय BHĀG. P. 1, 11, 7. त्रैलोक्यस्यापि विनाशाय MBH. 3, 12312. तस्याः न स नितिशो रूचये वभूवुः so v. a. *gefiehl ihr nicht* RAGH. 6, 44. तथा विमुक्तस्य — भविष्यति त्वं यदि संगमाय VIKR. 129. Spr. 1841. स्मृता भवति तापाय 3320. यथा वीणाङ्कुरः परिपुष्टः काले फलाय भवति *Früchte bringt* 2316. — e) mit loc. der Sache *sich hingeben, an Etwas gehen, sich beschäftigen mit*: दाने तपसि सत्ये च भव MBH. 3, 203. चरणालाने कृत्वा ब्राह्मणानां स्वयं ह्यभूत् 2, 1295. Spr. 2871. श्लाघ्ये कृत्ये नरस्य भविष्यतः 1873. — f) bei einer innigeren Verbindung von भू *werden* mit seinem Prädicate erscheint dieses nicht im Nominativ, sondern in einer durch alle Geschlechter und Zahlen unveränderlich bleibenden Form auf ई oder ऊः z. B. शुक्लो भवति (von शुक्ल), अग्नी (von अग्नि), अन्न (von अन्नम्), उच्चन्न (von उच्चतम्) P. 5, 4, 50. figg. VOP. 7, 81. figg. — g) भवति mit einem folgenden fut. *es kann geschehen, dass* P. 3, 3, 146. भवति तत्र भवावृष्यत् यज्ञायिष्यति Sch. — h) imperat. भवतु so v. a. *gut, schon gut, genug, wozu die vielen Worte? wozu das viele Nachdenken? die Sache ist ja klar*: = अस्तु. किम् H. 1328. ÇĀK. 7, 17. 9, 18. 40, 9. 64, 8. 79, 6. 81, 16. कथमिदानीमात्मानं निवेद्यामि । कथं वात्मापहारं करोमि । भवतु । इत्वं तावदेनो वक्ष्ये 13, 22. 8, 22. v. l. 12, 12. 18, 10. 30, 13. 33, 3. 101, 20. v. l. VIKR. 2, 2. PRAB. 21, 14. 30, 7. 33, 3. HIT. 17, 16. 33, 8. HIT. ed. JOHNS. 1214. — i) वभूवुः in Verbindung mit dem acc. eines nom. act. auf आ bildet wie आस und चकार periphrastische Perfecta, P. 3, 1, 40. Sch. VOP. 8, 56. — k) partic. praes. भवत् und praet. भूत् s. bes. — l) partic. fut. भविष्यत् *zukünftig*; n. *das Zukünftige, Zukunft* AV. 4, 11, 2. 10, 7, 9. 11, 7, 14. 13, 3, 7. ÇAT. BR. 2, 3, 1, 24. 10, 4, 1, 9. भविष्यद्भूयो भूनात् KĀTH. 19, 10. ĀÇV. GRH. 2, 4, 14. TS. 5, 1, 9, 2. KAUSH. UP. 1, 5. P. 3, 3, 3. VOP. 23, 1. KATHĀS. 1, 24. WEBER, RĀMAT. UP. 337. 331. SĀH. D. 29, 16. भविष्यती f. *das erste Futurum* bei den östlichen Gramma-